अध्याय 28

बुद्धि का तरीका

अध्याय 28 में अय्यूब के भाषणों की शृंखला का आरम्भ होता है जो उसके जीवन को चलाने वाले सदाचारों में उसकी बड़ी बात से समाप्त होती है (अध्याय 31)। कुछ विद्वान जहां अध्याय 28 को दखल[1] मानते हैं जो पुस्तक की समग्र रूपरेखा के साथ मेल खाता हुआ नहीं लगता, वहीं बढ़ती संख्या इसे अय्यूब और उसके मित्रों के बीच भाषणों के अंतराल,[2] सम्पर्क,[3] और समापन के रूप में मानती थी।[4]

होमेर हेली ने इस अध्याय को ''अय्यूब के भाषण का विस्तार (अध्याय 27) नाम देने को प्राथमिता दी। जिसने उसने मनुष्य के सम्पूर्ण बुद्धि तक पहुंचने की असम्भावना को दिखाया, वह चाहे इसे कितना ढूंढ़े, है तो यह परमेश्वर के पास।''[5] उसने ''यह ध्यान दिलाने के लिए कि हम कविता की सुन्दरता और सच्चाई को भूल जाएं'' ऐसे प्रश्नों में उलझने से चौकस रहें।[6]

अय्यूब की पुस्तक में संज्ञा शब्द ''बुद्धि'' (*chokmah, चोक्माह*) अठारह बार मिलता है।[7] क्रिया शब्द ''बुद्धिमान बनो'' (*chakam, चाकाम*) दो बार (32:9; 35:11), और विशेषण शब्द ''बुद्धिमान'' (*chakam, चाकाम*) आठ बात मिलता है (5:13; 9:4; 15:2, 18; 17:10; 34:2, 34; 37:24)। अय्यूब 12:12, 13; 28:12, 20, 28; 38:36; 39:17 में ''बुद्धि'' को ''समझ'' के समरूप बताया गया है। अय्यूब 15:8 में यह ''परमेश्वर की गुप्त सभा'' के समरूप है।

जैसा कि गरहर्ड वॉन रैड ने सही कहा है, जिस व्यक्ति के पास बुद्धि है वह इस बता को समझता है कि ''असल में एक क्रम है जो काम करता है, चुपचाप और कई बार शायद किसी का ध्यान उसकी ओर जाता, घटनाओं को संतुलित करता है।''[8] हमें याद रखना चाहिए कि ''क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है, 'वह ज्ञानियों को उनकी चतुराई में फंसा देता है''' (1 कुरिन्थियों 3:19); और ''पर यदि तुममें से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता हैं; और उसको दी जाएगी'' (याकूब 1:5)।

रोलैंड ई. मर्फी ने टिप्पणी की है:

> कविता का उद्देश्य चाहे अपने आप में स्पष्ट तौर पर बुद्धि के अत्यधिक महत्व पर बल देना है, जिसे केवल परमेश्वर (कोई जीव नहीं) जानता है, पुस्तक के अंदर कविता का उद्देश्य जैसा कि लगता है होने वाली बातचीत के दिवालीयेपन पर ज़ोर देना और ''यहोवा के भय'' का आग्रह करना है (28:28; 1:8; 2:3)।[9]

''मनुष्य छुपे हुए खजाने ढूंढ़ लेता है'' (28:1-11)

1''चाँदी की खानि तो होती है, और सोने के लिये भी स्थान होता है जहाँ लोग ताते

हैं। [2]लोहा मिट्टी में से निकाला जाता और पत्थर पिघलाकर पीतल बनाया जाता है। [3]मनुष्य अन्धियारे को दूर कर, दूर दूर तक खोद खोद कर, अन्धियारे और घोर अन्धकार में पत्थर ढूँढ़ते हैं। [4]जहाँ लोग रहते हैं वहाँ से दूर वे खानि खोदते हैं वहाँ पृथ्वी पर चलनेवालों के पाँव भी नहीं पड़ते वे मनुष्यों से दूर लटके हुए झूलते रहते हैं। [5]यह भूमि जो है, इससे रोटी तो मिलती है, परन्तु उसके नीचे के स्थान मानो आग से उलट दिए जाते हैं। [6]उसके पत्थर नीलमणि का स्थान हैं, और उसी में सोने की धूल भी है। [7]उसका मार्ग कोई मांसाहारी पक्षी नहीं जानता, और किसी गिद्ध की दृष्टि उस पर नहीं पड़ी। [8]उस पर हिंसक पशुओं ने पाँव नहीं रखा, और न उससे होकर कोई सिंह कभी गया है। [9]मनुष्य चकमक के पत्थर पर हाथ लगाता, और पहाड़ों को जड़ ही से उलट देता है। [10]वह चट्टान खोदकर नालियाँ बनाता, और उसकी आँखों को हर एक अनमोल वस्तु दिखाई पड़ती है। [11]वह नदियों को ऐसा रोक देता है, कि उनसे एक बूंद भी पानी नहीं टपकता और जो कुछ छिपा है उसे वह उजियाले में निकालता है।''

धातुओं का खनन प्राचीन निकट पूर्व के लिखित इतिहास से बहुत पहले आरम्भ हो गया। रत्नों और आभूषणों का विशेषकर मूल्य होता था। पूरे इलाके में सोना, चांदी, लोहा और पीतल बहुतायत से पाया जाता था। कीमती और कम कीमती रत्न भी जमीन में गहरे स्थानों में मिल जाते थे। फिरोजा सीनै की प्रायद्वीप में मिस्र के गुलामों के द्वारा ढूढ़ा जाता रहा। अय्यूब ने खनन की गतिविधि के विवरणों का सही सही बयान बताया।

फ्रांसिस आई. एंडरसन ने देखा, ''मित्रों की अंतिम लिखित बात यह है कि 'आदमी केंचुआ है' (25:6)। मनुष्यजाति के लिए अय्यूब के मन में अधिक सम्मान है ... सो यहां पर लेखक मनुष्य के परिश्रम और चतुरता की सराहना ही करता है।''[10]

आयत 1. चांदी बड़े पैमाने पर वहां पाई जाती थी जिसे आज लिबनोन और सीरिया कहा जाता है। इससे भी अधिक मात्रा में **सोना** मिस्र और ओपीर में पाया जाता था (22:24; 28:16)। क्रिया शब्द **खानि** (*zaqaq, ज़ा.का.क*) कच्ची धातु की धूल को गर्म करके तरल में बनाकर उसमें से अशुद्धियां निकालने की प्रक्रिया को कहा गया है।

आयत 2. कच्चा **लोहा** उत्तर में काले समुद्र के निकट और **पीतल** और लोहा दोनों के परे के क्षेत्र (आधुनिक जॉर्डन) में बहुतायत में पाया जाता था। सीनै प्रायद्वीप और नेगेव में भी पीतल पाया जाता था।

आयत 3. 28:3-11 में भूमि के बहुत नीचे के खनन की प्रक्रिया को बड़ी स्पष्टता से ब्यान किया गया है।

मनुष्य अन्धियारे को दूर कर खान में का रस्ता मिलने पर टार्चो या मशालों के इस्तेमाल का संकेत देता है। प्राचीन समयों में खदानों के कामों में असल में गुलामों को लगाया जाता था। कोई महत्वपूर्ण खोज करने पर उन्हें ईनाम दिया जाता।

अंधियारे (*'opel, ओपेल*) और **घोर अंधकार** (*tsalmaweth, साल्मावेथ*) को पहले मृत्यु से जोड़ा गया था (3:5, 6; 10:21, 22)। जॉन ई. हार्डले ने लिखा है, ''खान मज़दूर खजाने की खोज में पृथ्वी में नीचे तक गहराई में, मुर्दों के निवास (तुलना 10:21-22) गहरे अंधकार में जाने से डरते नहीं थे। मनुष्य चाहे सिरे या सीमा (*tak̲lît̲, ताक्लित*) तक जांच करे,

पर बुद्धि उससे परे ही रहती है (तुलना 11:6-9)।''[11]

आयत 4. प्राचीन निकट पूर्व के देशों में कीमती धातुओं को पाने की बड़ी इच्छा रहती थी। उन्हें पाने के लिए वे हर जगह खोजने के लिए तैयार रहते थे। **जहाँ लोग रहते हैं वहाँ से दूर** इस बात पर बल देता है कि ये खानें आम तौर पर सुनसान जगहों पर होती थीं। इसके अलावा खनन की **खानि**यां ज़मीन के नीचे तक गहरे तक धंस जाती थीं। रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा है, ''सबसे सजीव दृश्य खान मज़दूरों का रस्सियों के ऊपर झूलना है जब वे मोड़ों या क्षितिज के समानांतर मार्गों तक पहुंचने के लिए आपने आप को सीधा नीचे को कर देते हैं जहां अनाश्रित छेदों पर काम हो रहा था।''[12]

आयतें 5, 6. रोटी का संकेत उनके विपरीत जो **नीचे के स्थान** से निकलते और **आग से उलट दिए जाते हैं,** केवल **भूमि** से निकलने वाली फसलें हो सकता है (देखें भजन संहिता 104:14)। वैकल्पिक रूप में यह खनन से कमाई गई सम्पत्ति से भोजन खरीदने की क्षमता का संकेत हो सकता है।

आयतें 7, 8. दोनों आयतों का आरम्भ पहली पंक्ति में विस्तृत श्रेणी के साथ होता है (**मांसाहारी पक्षी; हिंसक पशुओं**) और दूसरी पंक्ति में उसी श्रेणी के प्रमुख उदाहरण के साथ समाप्त होता है (**गिद्द; सिंह**)। ''हिंसक पशुओं'' इब्रानी मुहावरे ''घमण्डियों या घमण्ड के पुत्रों'' (*b^{e}ney shachats, बेने साचटस*) का अनुवाद है (देखें 41:34)।

इन आयतों में इस बात का विरोध किया गया है कि खनन का काम जानवरों की नज़र से दूर भूमि के बहुत नीचे होता था। हवा में गिद्द जो अपनी तीखी नज़र के लिए जाना जाता है, और भूमि पर सिंह जो अपने स्वाभाविक साहस के लिए प्रसिद्ध है, मनुष्य के खनन के अभियानों से या तो अनजान हैं या उदासीन। हार्टले की टिप्पणी है, ''खनन में साबित हो चुका है कि मनुष्य का तकनीकी कौशल पृथ्वी पर सब जीवों के ऊपर उसकी श्रेष्ठता को दिखाता है।''[13]

आयत 9. अतिश्योक्ति वाली भाषा का इस्तेमाल करते हुए इन शब्दों में मनुष्य की सामर्थ पर ज़ोर दिया गया है। खनिक मज़दूर **जड़ ही** पर अर्थात **पहाड़ों** की बिल्कुल तह के नीचे खुदाई करता है। जिससे वह उन्हें **उलट देता है**!

आयत 10. नालियां (*y^e'orim, येओरिम*) शब्द कई बार नील नदी के संदर्भ में एकवचन में और नील की उपनदियों के संदर्भ में बहुवचन में है। यहां पर खानों की विभिन्न सुरंगों को दर्शाता है कि **चट्टान खोदकर** निकाली जाती हैं।[14] आल्डन ने लिखा है,

> किसी खनिक के लिए चट्टान को तोड़ देने पर यह पता चलना कि उसने खजाने के ऊपर चोट मारी है विशेष विजय का क्षण होता है। ''उसकी आंखें इसके हर खजाने को'' विशेष आनन्द से देखती हैं। लोग अगर बुद्धि की खोज के लिए ऐसा ही प्रयास करें तो उन्हें ऐसा ही खजाना देखने को मिलता है।[15]

आयत 11. यहां दिया गया विवरण खान में उन जगहों पर रुकने का संकेत देता है जहां पानी टपकता है और पानी भर आता है। एक और सम्भावना यह है कि यह काम भूमि के ऊपर किया जाता है; नीचे के बहते पानी के खजाने को जो **छिपा** हुआ है निकालने के लिए **नदियों** को रोक दिया जाता है। मनुष्य उन कई बाधाओं पर काबू पा सकता है जो धन पाने की उसकी

खोज में रुकावट बनती हैं।

''मनुष्य बुद्धि को नहीं ढूंढ़ सकता'' (28:12-22)

**12''परन्तु बुद्धि कहाँ मिल सकती है? और समझ का स्थान कहाँ है? 13उसका मोल
मनुष्य को मालूम नहीं, जीवनलोक में वह कहीं नहीं मिलती! 14अथाह सागर कहता है, 'वह
मुझ में नहीं है,' और समुद्र भी कहता है, 'वह मेरे पास नहीं है।' 15चोखे सोने से वह मोल
लिया नहीं जाता, और न उसके दाम के लिये चाँदी तौली जाती है। 16न तो उसके साथ
ओपीर के कुन्दन की बराबरी हो सकती है; और न अनमोल सुलैमानी पत्थर या नीलमणि
की। 17न सोना, न काँच उसके बराबर ठहर सकता है, कुन्दन के गहने के बदले भी वह
नहीं मिलती। 18मूंगे और स्फटिकमणि की उसके आगे क्या चर्चा! बुद्धि का मोल माणिक
से भी अधिक है। 19कूश देश के पद्मराग उसके तुल्य नहीं ठहर सकते; और न उस से चोखे
कुन्दन की बराबरी हो सकती है। 20फिर बुद्धि कहाँ मिल सकती है? और समझ का स्थान
कहाँ है? 21वह सब प्राणियों की आँखों से छिपी है, और आकाश के पक्षियों के देखने में
नहीं आती। 22विनाश और मृत्यु कहती हैं, 'हमने उसकी चर्चा सुनी है।'''**

यहां पर अय्यूब ने कीमती पत्थरों और धातुओं को खोजने की मनुष्य की *योग्यता* और बुद्धि की खोज की उसकी *अयोग्यता* में अंतर किया। अय्यूब ने यह दावा नही किया कि मनुष्यों में बुद्धि नहीं है, परन्तु यह कि इसे संसार से प्राप्त नहीं किया जा सकता।[16] असली बुद्धि मनुष्यजाति की आत्मिक गुणों में मिलती है। इस पद्य में दो सवाल पूछे गए हैं: ''बुद्धि कहां मिल सकती है?'' (28:12) और ''समझ का स्थान कहां है?'' (28:20)। उत्तर अध्याय के अंतिम पद्य में दिया गया है।

आयत 12. बुद्धि और **समझ** का इस्तेमाल यहां पर काव्य समरूपता में किया गया है और दोनों का अर्थ एक ही है।

आयतें 13-19. ''उसका मोल मनुष्य को मालूम नहीं।'' ''मोल'' बुद्धि की कीमत का अनुमान है। अधिकतर लोगों को इसकी वास्तविक कीमत की कदर नहीं होती। अय्यूब ने कई धातुओं का उल्लेख किया जिन्हें उसके समय में बड़ी कीमती माना जाता होगा। बुद्धि के मोल से न तो **चोखे सोने**, **चांदी**, **ओपीर के कुंदन**, **अनमोल सुलैमानी पत्थर**, **नीलमणी**, **कांच**, **मूंगे**, **स्फटिकमणि** को और न माणिक को मिलाया जा सकता है।

नीतिवचन की पुस्तक ''यहोवा की ओर से लिखी'' के बड़े मोल को बहुत स्पष्ट कर देती है:

> क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे, क्योंकि बुद्धि की प्राप्ति चान्दी की प्राप्ति से बड़ी, और उसका लाभ चोखे सोने के लाभ से भी उत्तम है। वह मूंगे से अधिक अनमोल है, और जितनी वस्तुओं की तू लालसा करता है, उन में से कोई भी उसके तुल्य न ठहरेगी। उसके दहिने हाथ में दीर्घायु, और उसके बाएं हाथ में धन और महिमा है। उसके मार्ग मनभाऊ हैं, और उसके सब मार्ग कुशल के हैं। जो बुद्धि को ग्रहण कर लेते हैं, उनके लिये वह जीवन का वृक्ष बनती है; और जो उसको

पकड़े रहते हैं, वह धन्य हैं (नीतिवचन 3:13-18)।

आयतें 20-22. ''फिर बुद्धि कहाँ मिल सकती है? और समझ का स्थान कहाँ है?'' अय्यूब उसी प्रश्न पर लौट आया जो उसने आयत 12 में पूछा था। उसने पहले ही कहा था कि यह ''जीवन लोक'' या ''अथाह सागर'' में नही मिलती (28:13, 14)। फिर उसने आगे कहा: ''**वह सब प्राणियों की आँखों से छिपी है, और आकाश के पक्षियों के देखने में नहीं आती।**'' कहने का मतलब है कि बुद्धि कोई *स्वाभाविक प्राप्ति* नहीं है कि उसे भौतिक संसार में ढूंढ़ा जाए। ''**विनाश और मृत्यु** [भी केवल] **कहती हैं, 'हमने उसकी चर्चा सुनी है'।**'' ''विनाश'' और ''मृत्यु'' दोनों मृतकों के संसार को कहा गया है (26:5, 6 पर टिप्पणियां देखें)।

''परमेश्वर बुद्धि देता है'' (28:23-28)

[23]''परन्तु परमेश्वर उसका मार्ग समझता है, और उसका स्थान उसको मालूम है। [24]वह तो पृथ्वी की छोर तक ताकता रहता है, और सारे आकाशमण्डल के तले देखता भालता है। [25]जब उसने वायु का तौल ठहराया, और जल को नपुए में नापा, [26]और मेंह के लिये विधि, और गर्जन और बिजली के लिये मार्ग ठहराया, [27]तब उसने बुद्धि को देखकर उसका बखान भी किया, और उसको सिद्ध करके उसका पूरा भेद जान लिया। [28]तब उसने मनुष्य से कहा, 'देख, प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है: और बुराई से दूर रहना यही समझ है'।''

अय्यूब ने उन प्रश्नों का उत्तर दिया जो उसने 12 और 20 में पूछे थे। मनुष्य की चतुराई इस उत्तर को न साबित कर सकी है और न कर सकती है, इसके लिए उसे परमेश्वर की ओर देखना आवश्यक है।

आयत 23. ''परन्तु परमेश्वर उसका मार्ग समझता है, और उसका स्थान उसको मालूम है।'' ऐसा इसलिए है कि क्योंकि उसने आरम्भ में बुद्धि को सृजा। पुराने नियम के कई लेखकों द्वारा परमेश्वर को ही बुद्धि ठहरा दिया गया:

> यहोवा ने पृथ्वी की नेव बुद्धि ही से डाली; और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर किया (नीतिवचन 3:19)।

> उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ से बनाया, उस ने जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया, और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है (यिर्मयाह 10:12; देखें 51:15)।

> ''परमेश्वर का नाम युगानुयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं'' (दानिय्येल 2:20)।

आयत 24. ''वह तो पृथ्वी की छोर तक ताकता रहता है, और सारे आकाशमण्डल के तले देखता भालता है।'' यही वह बुद्धि है जिसके द्वारा परमेश्वर शासन करता है। आत्मिक या नैतिक संसार के साथ साथ शारीरिक या भौतिक संसार में इसके नियमों को केवल वही चलाता है।[17]

आयतें 25-27. इन आयतों में परमेश्वर की सृजनात्मक गतिविधि का वर्णन है। उसने

वायु, **जल**, **मेंह** और **गर्जन** को **ठहराया**। यह वह गतिविधि है जिसे न तो कोई दूसरा कर पाया और न कर सकता है।

आयत 28. ''तब उसने मनुष्य से कहा, 'देख, प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है: और बुराई से दूर रहना यही समझ है'।'' अंत में उत्तर दे दिया गया! ''प्रभु का भय मानना''[18] और ''बुराई से दूर रहना'' पुस्तक में पहले (1:1, 8; 2:3) और नीतिवचन की पुस्तक में (नीतिवचन 3:7; 14:16; 16:6) लगभग इसी रूप में मिलते हैं। परमेश्वर का ''भय'' मानने का अर्थ उसकी भक्ति, आदर और अराधना करना है। इससे व्यक्ति को अपनी स्वयं की सीमाओं की पहचान और परमेश्वर की महानता का ज्ञान होता है। आदमी ''बुद्धि में मुख्यतया परमेश्वर की आज्ञा मानने से बढ़ता है न कि अज्ञात की खोज से।''[19] बदले में इससे वह ''बुराई से दूर'' होता है। एच. एच. रोअले ने लिखा है:

> अपनी सारी निरन्तर गतिविधियों से मनुष्य बहुत कुछ सीख सकता है और बहुत कुछ पा सकता है। परन्तु बुद्धि को जिसमें उसकी वास्तविक भलाई मिलती है और जिसमें वह अपने होने के गहरे उद्देश्य को पूरा करता है, इस तरीके से नहीं पाया जाता। परन्तु अपने अनुग्रह में परमेश्वर उसके ऊपर इस भेद को प्रकट करता है, जो भक्तिपूर्ण ढंग से उसके परमेश्वर के प्रति समर्पण में मिलता है न कि बुराई से दूर रहने से। बाइबल की सारी शिक्षा का सार यही है।[20]

प्रासंगिकता

ऊपर से बुद्धि (अध्याय 28)

अध्याय 28 में अय्यूब ने इस तथ्य को साबित किया कि असली बुद्धि के लिए मनुष्य परमेश्वर के ऊपर निर्भर है। गुप्त खजानों के लिए मनुष्य की अनावृत खोज से आत्मिक खजानों की परमेश्वर की ओर से बहुतायत से दिए जाने तक इस अध्याय को आसानी से तीन भागों में बांटा जाता है।

मनुष्य छिपे हुए खजाने ढूंढ़ता है (28:1-11)। अय्यूब ने चांदी, सोने, लोहे, ओर पीतल सहित महत्वपूर्ण धातुओं के खनन तथा शुद्धिकरण को विस्तार से बताया (28:1, 2)। उसके समय के लोग इन कीमती खज़ानों को ढूंढ़ने के लिए बहुत आगे निकल गए थे। उन्होंने मानवीय बस्तियों से बहुत दूर और पंछियों और पशुओं की नज़रों से दूर नीचे गहराइयों में बिना डरे खुदाई कर डाली थी (28:3-8)। बड़ी सरलता से उन्होंने पहाड़ों को उखाड़ दिया था, चट्टानों में रास्ते निकाल लिए थे और नदियां बना ली थीं (28:9-11)।

अमेरिका के इतिहास का वर्णन इसी प्रकार से किया जा सकता है जिसमें आरम्भ में वहां आने वाले लोग खजाने की खोज की उम्मीद से पश्चिम की ओर निकल पड़े। 1800 के आरम्भिक वर्षों में कई लोगों को कई ''अप्रत्याशित लाभ'' हुए। 1849 में लोग सोना निकालने की उम्मीद से कैलिफोर्निया के पास जाकर बसने लगे। 1859 में सोना निकालने वाले पचास हज़ार लोग पाइकस पीक नामक इलाके में चले गए जो बाद में स्टेट ऑफ़ कोलोराडो के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 1874 में दक्षिण पश्चिमी डकोटा के इलाके की ब्लैक हिल में एक और अप्रत्याशित

लाभ मिला। धनवान बनने के लिए लोग सब कुछ दांव पर लगा लेते थे।

मनुष्य बुद्धि को पा नहीं सकता (28:12–22)। लोग भूमि में से कीमती धातुएं निकालने में चाहे सफल हो गए हैं पर वे वास्तविक अर्थात आत्मिक बुद्धि को अपने आप ढूंढ़ने में सफल नहीं हुए हैं। अय्यूब ने पूछा था, ''परन्तु बुद्धि कहाँ मिल सकती है? और समझ का स्थान कहाँ है?'' (28:12)। उसने आगे कहा कि यह ''जीवनलोक'' में या ''अथाह सागर'' में नहीं मिलती (28:13, 14)। और तो और बुद्धि को कीमती धातुओं और पत्थरों से खरीदा नहीं जा सकता (28:15–19)। अपने प्रश्नों को दोहराने के बाद (28:20), अय्यूब ने ज़ोर देकर कहा कि बुद्धि मनुष्यजाति से छिपी हुई है (28:21, 22)।

आज बहुत से लोगों ने सांसारिक शिक्षा तथा फिलासफी के माध्यम से बुद्धि की खोज कर ली है। कोई शिक्षा के किसी विशेष क्षेत्र में कॉलेज से डिग्री प्राप्त कर सकता है, बहुत सारा ज्ञान पा सकता है पर इसके बावजूद वास्तविक बुद्धि की कमी रहेगी ही। खज़ाने पर चोट करने के बजाय उसके पास ''मूर्ख का सोना'' रह सकता है। पौलुस ने लिखा, ''इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है'' (1 कुरिन्थियों 3:19)।

बुद्धि केवल परमेश्वर ही देता है (28:23–28)। अय्यूब ने इस अध्याय को यह ज़ोर देते हुए समाप्त किया कि बुद्धि परमेश्वर की ओर से ही मिलती है: ''परमेश्वर उसका मार्ग समझता है, और उसका स्थान उसको मालूम है'' (28:23)। यह सच है कि परमेश्वर ने बुद्धि को सृजा यानी यह उससे निकलती है (28:24–27)। इसलिए बुद्धि ''प्रभु का भय मानने'' से और बुराई से दूर रहने से आती है (28:28)। बुद्धिमान ने लिखा, ''ओर [बुद्धि] को चान्दी की नाईं ढूंढ़े, और गुप्त धन के समान उसी खोज में लगा रहे; तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा'' (नीतिवचन 2:4, 5)।

बाइबल में आज हमारे पास बहुत बड़ा खज़ाना है जो हम पर परमेश्वर की बुद्धि को प्रकट करता है। हमें इसका अध्ययन करना, इस पर मनन करना, इसे जीना, और इसे दूसरों के साथ बांटना चाहिए। इसके अलावा हमें प्रार्थना करने की आशीष से आशीष भी मिली है। याकूब ने लिखा, ''पर यदि तुममें से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उसको दी जाएगी'' (याकूब 1:5)। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]आर. बी. वाई. स्कॉट ने लिखा, ''अध्याय 28 एक स्वतन्त्र कविता है'' (आर. बी. वाई. स्कॉट, *द वे ऑफ़ विज़्डम इन द ओल्ड टैस्टामैंट* [न्यू यॉर्क: मैक्मिलन कं., 1971], 148)। [2]फ्रांसिस आई. एंडरसन ने लिखा, ''कविता को अंतराल कहकर हम अय्यूब और उसके मित्रों के बीच तीन दौर के वार्तालाप से अय्यूब, एलीहू और परमेश्वर के तीन दौर के एकालापों में जाने की बात कहना उपयुक्त लगता है'' (फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर–वर्सिटी प्रैस, 1974], 223)। [3]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 373. [4]*सिटिंग विद अय्यूब: सलेक्टड स्टडीज़ आन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* सम्पा. रॉय बी. ज़यूक (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 305 में नॉर्मन सी. हेबल, ''विज़्डम इन द बुक ऑफ़ अय्यूब।'' [5]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 241. [6]वहीं, 242. [7]अय्यूब 4:21; 11:6; 12:2, 12, 13; 13:5; 15:8; 26:3; 28:12, 18, 20, 28; 32:7,

13; 33:33; 38:36, 37; 39:17. ''खरी बुद्धि'' (11:6; 12:16) और ''समझ'' (34:35) अलग-अलग इब्रानी शब्दों से लिए गए हैं। [8]गरहर्ड वॉन रेड, *ओल्ड टैस्टामैंट थियोलोजी,* अनु. डी. एम. जी. स्टाल्कर (न्यू यॉर्क: हार्पर ऐंड रो, 1965), 2:428. [9]रोलैंड ई. मर्फी, *विज़्डम लिटरेचर: अय्यूब, प्रोवर्ब्स, रूथ, कैटिक्लस, एक्लेसिएस्टस, एस्थेर,* द फॉर्म्स ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट लिटरेचर, अंक 13, सम्पा. रौल्फ नियरिम ऐंड जीन एम. टक्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1981), 37. [10]एंडरसन, 224-25.

[11]हार्टले, 376. [12]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 272. [13]हार्टले, 377. [14]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:381-82. [15]आल्डन, 273. [16]एंडरसन, 227. [17]हेली, 246. [18]अय्यूब की पुस्तक में ''यहोवा'' (*'Adonay, अदोनाय*) शब्द केवल एक बार आया है। 12:9 के अपवाद के साथ ''यहोवाह'' (*YHWH, यहवह*) या ''याहवेह'' केवल पुस्तक के आरम्भ और अंत के निकट ही मिलता है (अध्याय 1, 2, 38, 40, 42)। आम तौर पर पुस्तक में ''परमेश्वर'' (*'Elohim, इलोहीम*) शब्द इस्तेमाल हुआ है। [19]हार्टले, 383. [20]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलिना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 234.